श्री मुनिसुव्रतनाथ, विद्याप्राप्ति चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचयिता

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.नं.
1.	आशीर्वाद	ग.ग. कुन्थुसागर जी	4
2.	शुभ संदेश व मंगल कामनायें	आचार्य कनकनंदी जी	5
3.	आज की आवश्यकता	आचार्य गुप्तिनंदी जी	7
4.	भक्ति से भगवान	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	9
5.	श्री नित्यमह पूजा	ग.आर्यिका राजश्री माताजी	11
6.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा	आचार्य गुप्तिनंदी जी	15
7.	विधान मंडल		18
8.	ऋद्धि मंत्र		19
9.	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान		20
10.	प्रशस्ति		30
11.	आरती		31
12.	श्री विद्याप्राप्ति विधान		33
13.	सरस्वती माता की आरती		55
14.	प्रशस्ति		58
15.	चौंसठ ऋद्धि विधान		59
16.	लघु गणधर वलय विधान		74
17.	प्रशस्ति		80
18.	गणधर भगवान की आरती		81

आशीर्वाद

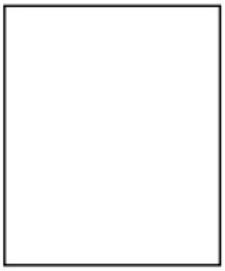

बड़ी प्रशंसा की बात है कि आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी के द्वारा '' **श्री मुनिसुव्रतनाथ, विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान**'' लिखा गया। अब वह प्रकाशित होने जा रहा है। इस प्रकार की पूजा से समस्त ग्रहों की शांति होती है। आपने विधान लिखने में बहुत अच्छा प्रयत्न किया है। आपकी रचना बहुत सुन्दर है इसी प्रकार जिनवाणी की सेवा करते रहें ऐसी मैं मंगल कामना करता हूँ। समाज को ग्रहों की शांति के लिए यह विधान अवश्य करना चाहिए तथा लाभ उठाना चाहिए।

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य कुन्थुसागरजी

कुंथुगिरी

शुभ संदेश व मंगल कामनायें

(पूजा का स्वरूप व फल)

(चाल – यमुना किनारे...)

पूज्य पुरुषों की पूजा सदा ही करो।
पूज्य गुण स्मरण व कीर्तन करो॥
यथायोग्य पूज्य गुण ग्रहण करो।
सातिशय पुण्य से स्वर्ग–मोक्ष को वरो॥1॥

देव–शास्त्र–गुरु हैं पूज्य हमारे।
वीतरागी देव बनना लक्ष्य हमारे॥
लक्ष्य प्रतिपादक है शास्त्र हमारे।
लक्ष्य के साधक हैं गुरु हमारे॥2॥

तन–मन–वचन से पूजा विधेय।
कृत–कारित–अनुमत से यह विधेय॥
ख्याति–पूजा–लाभ परे पूजा विधेय।
श्रद्धा–भक्ति–शक्ति से यह विधेय॥3॥

पूजा से परिणाम को निर्मल/पावन करो।
सातिशय पुण्य बान्धो व पाप विनाशो॥
संकट–संक्लेश–संताप विनाश करो।
स्वर्ग–मोक्ष–सुख को पाया ही करो॥4॥

भाव सहित पूजा करते हैं श्रावक।
श्रमण होता मुख्यतः भाव पूजक॥
पूजा से पूज्य बनना है लक्ष्य सभी का।
आत्मोपलब्धि करना है लक्ष्य 'कनक' का॥5॥

गुप्तिनंदी शिष्य रचते विविध विधान।
उनके लिये प्रतिनमोऽस्तु है मम॥
सहायक प्रकाशक पूजक जनों को।
शुभाशीर्वाद मंगल कामना सभी को॥6॥

हर मनुष्य को पूज्य पुरुषों की पूजा करना चाहिये। हम पूजा में पूज्य पुरुषों के गुण स्मरण और उनका कीर्त्तन करते हैं। पूज्य पुरुषों से उनके गुण ग्रहण करते हैं। इस पूजा से सातिशय पुण्य का बंध होता है। यह पूजा स्वर्ग व परम्परा से मोक्ष दिलाती है। मन, वचन, काय और कृतकारित अनुमोदना से पूजा करना चाहिये। ख्याति लाभ मान–प्रतिष्ठा से दूर रहकर पूजा करना चाहिये। पूजा से अपने परिणाम निर्मल बनाना चाहिये, शुद्धि से की गई पूजा ही पाप को नष्ट करती है।

श्रावक द्रव्य सहित पूजा करता है और श्रमण भाव से पूजा करते हैं। पूजा से पूज्य बनना ही हमारा लक्ष्य है। ऐसे पवित्र भावना से हमारे प्रिय शिष्य आचार्य गुप्तिनंदी ने अनेक विधानों की रचना की है। उन विधानों में एक अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले **'श्री मुनिसुव्रतनाथ, विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान'** है। हमारे आचार्यों ने नवग्रह के विषय में अनेक ग्रंथों में बताया है। तत्त्वार्थ सूत्र के चौथे अध्याय में ज्योतिष देवों का वर्णन आया है। यह विधान करने वाले सभी भक्त आत्मोपलब्धि को प्राप्त करें। वही मेरा भी लक्ष्य है।

आचार्य गुप्तिनंदी को प्रति नमोऽस्तु। सहायक, पूजक, प्रकाशक सभी को शुभाशीर्वाद।

-आचार्य कनकनंदीजी
सागवाड़ा

आज की आवश्यकता

दोहा

सर्व जीव के दुःख हरें, मुनिसुव्रत जिनदेव।
जिन गुण सम्पत के लिए पूजें उन्हें सदैव।।

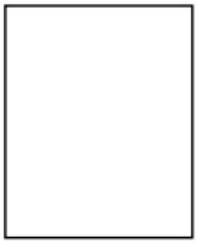

सम्यग्दृष्टि जीवों के लिए सभी तीर्थंकर आराध्य हैं, फिर भी नीति है **''आर्त्त नरा धर्म परा भवन्ति''** दुःखी मनुष्य अपने दुःखों से पीड़ित हो धर्मपरायण होते हैं। वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल के प्रभाव से अनेक प्रकार मिथ्या मत मतान्तर प्रचलित हैं।

नव ग्रहों के नाम पर भी झूठ का कालाबाजार धड़ल्ले से चल रहा है। मीडिया में अनेक बाबा शनि आदि ग्रहों का भय दिखाकर भोली जनता को झूठे कर्म काण्ड में फंसा रहे हैं। कतिपय जैन श्रावक भी मिथ्या मतों में भटक रहे हैं। उन सबको शनिग्रह की सभी प्रकार की बाधाओं से बचाने के लिए सभी समस्याओं का समाधान भी **'श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान'** हैं।

सम्पूर्ण भारत में श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के अनेक सिद्धक्षेत्र, तीर्थक्षेत्र व अतिशय क्षेत्र हैं। उनमें पैठन, केशवराय पाटन, मांगीतुंगी, किरठल, जहाजपुर, जयपुर, भानासहिवरा आदि–आदि अनेक तीर्थ हैं। उनमें पैठन एक ऐसा तीर्थ है। जहाँ मुनिसुव्रतनाथ भगवान की चतुर्थकालीन प्रतिमा हैं। प्राचीन किवदंती के अनुसार इसे खरदूषण राजा ने स्वयं गोदावरी की बालू से बनाया और रामचंद्र, लक्ष्मण आदि महापुरुषों ने महापूजा की। यहाँ की अनेक प्राचीन घटनायें व इतिहास हैं जो आश्चर्यकारी है। पैठन क्षेत्र जितना जैनों के लिए महत्वपूर्ण है उतना ही अजैनों में भी प्रसिद्ध है।

हर शनि अमावस्या को यहाँ विशेष महामस्तकाभिषेक महोत्सव होता है। जिसमें हजारो भक्त-यात्री एकत्रित होते हैं। 24 जून 2017 को शनि अमावस्या के महाभिषेक के निमित्त श्री मुनिसुव्रत दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कमेटी ने मुझे ससंघ पैठन आने का निमंत्रण दिया। साथ ही **'श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान'** की **सात दिवसीय संगीतमय कथा** का सर्वप्रथम आयोजन किया। इसके निमित्त से ही आर्यिका आस्थाश्री माताजी सहित संघ के निवेदन पर श्री धर्मतीर्थ क्षेत्र में प्रस्तुत **'श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान'** की रचना हुई है।

यह विधान प्रभु के अतिशय से 29 मई से 31 मई 2017 के बीच मात्र तीन दिनों में ही तैयार हो गया। ये प्रभु की ही कृपा है। हमारे दोनों गुरुओं का आशीर्वाद हमारे लिए सबसे बड़ा सम्बल है। उन्हें कोटि-कोटि नमोऽस्तु-3 । हमारे सभी कार्यों में हमारे पूरे संघ का, हमारे शिष्यों का बड़ा सहयोग है। उन सबको इस हेतु बहुत सारा आशीर्वाद। सभी को यथायोग्य..।

प्रस्तुत संस्करण में **श्री मुनिसुव्रतनाथ के साथ विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान** का एक साथ प्रकाशन किया गया है।

इस ग्रन्थ के प्रकासन में जिन दाताओं ने अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग किया है उन सभी भक्त परिवारों को हमारा भरपूर आशीर्वाद है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशक, मुद्रक, पूजक, पाठक, दर्शक, वाचक, सहयोगी, प्रचारक सभी को हमारा बहुत सारा आशीर्वाद।

-आचार्य गुप्तिनंदी
श्री धर्मतीर्थ
5-6-2017

भक्ति से भगवान

जिनेभक्ति-जिर्नेभक्ति-र्जिनेभक्ति-दिने-दिने।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु भवे-भवे॥

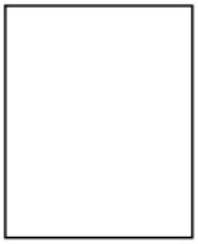

इस संसार में जो भगवान का सच्चा भक्त होगा वो ही भव-भव में भक्ति की कामना करेगा। पंचम काल में दुर्गतियों से, दुःखों से एकमात्र जिनेन्द्र भक्ति ही छुड़ा सकती है।

हम किसी भी रूप में प्रभु की भक्ति कर सकते हैं परन्तु मनुष्य का मन इतना चंचल है, वो अधिक समय तक एक ही विषय में नहीं लगता है। उसे वश में करने के लिए जिनशासन में भक्ति करने के भी कई साधन बताये हैं। अभिषेक, पूजा, पाठ, स्तोत्र, स्तुति, भजन, कीर्त्तन, विधान, मंत्र, जाप आदि।

हमारे आचार्यों ने कहा है- जो जीव आगे तीर्थंकर जैसे महापद को पाने वाला है वो भव्य प्राणी भी पूर्व के अनेक भवों में भगवान की विशेष भक्ति करता है। अपने घर से हर प्रकार की शुद्ध सामग्री तैयार करके मंदिर में लेकर जाता है। स्वयं भगवान की एक बार नहीं त्रिकाल पूजा विधान, अभिषेक करता है। त्रिकाल यानि तीनों कालों में भक्ति करता है।

आज हर जीव नवग्रह की बाधा से पीड़ित है। उन नवग्रहों में भी सबसे अधिक दुःखी व्यक्ति शनिग्रह की बाधा वाले मिलेंगे। जिसको शनिग्रह की साढ़े साती, ढैय्या पनोती लगी है। उन्हें मिथ्यात्व में भटकने की आवश्यकता नहीं है। हमारे 24 तीर्थंकरों में 20वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत भगवान हैं। आप उनका विधान, मंत्र, जाप, चालीसा पढ़कर अपने ग्रह को अनुकूल बना सकते हैं।

आज लोगों को कम समय में अधिक पुण्य कमाने का अवसर मिल जाये, कम समय में पूजा विधान हो जाये, इस बात का ध्यान रखते हुये हमारे आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव ने ये छोटे-छोटे '**श्री मुनिसुव्रत, विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान**' लिखे हैं। आचार्य भगवन महाकवि हैं। उन्होंने इन विधानों के पूर्व भी अनेक छोटे-बड़े विधानों की रचना की है। कई विधानों का उन्होंने संपादन किया है। ये सभी विधान हर दिन व्यक्ति अकेले ही 15-20 मिनट में आराम से कर सकता है।

आचार्यश्री बचपन से ही कविता, भजन आदि लिखा करते हैं। उनकी लेखनी चलती रही और पूजन एवं विधान की रचना प्रारम्भ हुई। इस तरह शब्दों का, छंद मात्रा का आदि ध्यान रखते हुये आपने सरल शब्दों में ऐसी रचना की जिसे हर व्यक्ति समझ सके तथा आज भी उनके अनुसार हमेशा कुछ-न-कुछ लिखते रहते हैं।

आचार्यश्री बड़े ही सरल स्वभावी हैं, ज्ञानी, विद्वान, बहु प्रतिभाओं के धनी, वात्सल्यमूर्ति, सभी जीवों के कष्ट मिटाने वाले हैं। उनके पास में आने वाले भक्त कभी निराश होकर नहीं जाते हैं। जिन गुरु भक्तों ने जब भी गुरुदेव से बच्चों के लिये व अपने कार्यों के लिये आशीर्वाद माँगा है। उनको आशीर्वाद में गुरुदेव ने प्रभु भक्ति का मार्ग बताया है। गुरुदेव स्वयं भी भक्ति करते हैं और अपने भक्तों को भी भक्ति का ही मार्ग बताते हैं। उनके द्वारा लिखे सभी विधान सभी के कष्ट मिटायें और गुरुदेव की यश-कीर्ति दिग्दिगांत में फैले इसी भावना के साथ गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु, नमोऽस्तु।

विधानकर्त्ता, पूजक, पाठक, प्रकाशक सभी को शुभाशीर्वाद।

इति मंगलम् !

- आर्यिका आस्थाश्री

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा॥4॥

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन॥
अहिक्षेत्र अणिंदा वृषभदेव जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर॥5॥

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल के चन्दा को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वन्दन॥
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी॥6॥

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन॥7॥

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें॥
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना॥
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा, हम दु:ख मिटायें आपना॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें॥
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे॥ जिन शासन...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये॥ जिन शासन...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे॥ जिन शासन...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनायें भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : चौबिस जिन के चरण में, मिलती शांति अपार।
शांतिधार देकर करें, पुष्पाञ्जलि सुखकार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र : ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये॥1॥
सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे॥2॥
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता॥3॥
विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें॥4॥
कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते॥5॥
नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे॥6॥
चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये॥7॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

जिनभक्त निर्मल भाव से, 'चौबीस जिन' पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो, सुर-नर उसे वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्ण कर, भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान मंडल

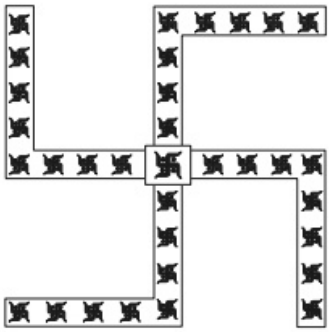

कुल 32 अर्घ

श्री सरस्वती विधान मण्डल

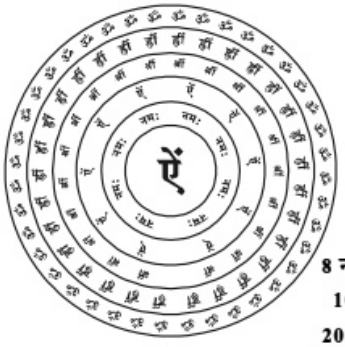

8 नमः
10 ऐं
20 श्रीं
30 ह्रीं
41 ॐ
कुल 109 अर्घ

गणधर वलय माण्डला

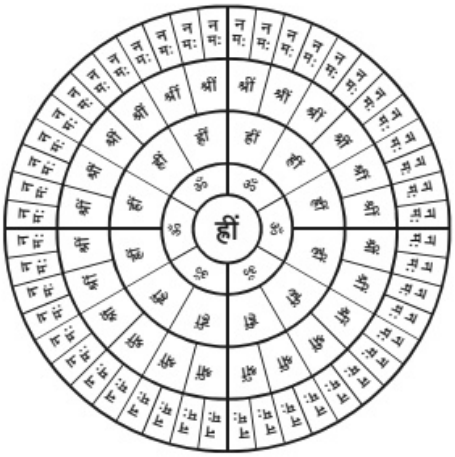

यह मण्डल 5 कोष्ठक का बनता है। प्रत्येक कोष्ठक में निम्न प्रकार अर्घ चढ़ाये जाते हैं :ख

प्रथम कोष्ठक में **'ह्रीं'** बीजाक्षर। द्वितीय कोष्ठक में **'ॐ'** (6), तृतीय कोष्ठक में 'ह्रीं' (12), चतुर्थ कोष्ठक में 'श्रीं' (24) व पंचम कोष्ठक में 'नमः' (48) **कुल योग= 90**

गणधर वलय मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥1॥

1. णमो जिणाणं **2. णमो ओहि-जिणाणं** **3. णमो परमोहि-जिणाणं**
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं **5. णमो अणंतोहि-जिणाणं** **6.णमो कोट्ठ-बुद्धीणं**
7. णमो बीज-बुद्धीणं **8. णमो पादाणु-सारीणं** **9. णमो संभिण्ण-सोदारणं**
10. णमो सयं-बुद्धाणं **11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं** **12. णमो बोहिय-बुद्धाणं**
13. णमो उजु-मदीणं **14, णमो विउल-मदीणं** **15. णमो दस पुव्वीणं**
16. णमो चउदस-पुव्वीणं **17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं**
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं **19. णमो विज्जाहराणं** **20. णमो चारणाणं**
21. णमो पण्ण-समणाणं **22. णमो आगासगामीणं** **23. णमो आसी-विसाणं**
24. णमो दिट्ठिविसाणं **25. णमो उग्ग-तवाणं** **26. णमो दित्त-तवाणं**
27. णमो तत्त-तवाणं **28. णमो महा-तवाणं** **29. णमो घोर-तवाणं**
30.णमो घोर-गुणाणं **31. णमो घोर-परक्कमाणं** **32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं**
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं **34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं** **35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं**
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं **37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं** **38. णमो मण-बलीणं**
39. णमो वचि-बलीणं **40. णमो काय-बलीणं** **41. णमो खीर-सवीणं**
42. णमो सप्पि-सवीणं **43. णमो महुर सवीणं** **44. णमो अमिय-सवीणं**
45. णमो अक्खीण महाणसाणं **46. णमो वड्ढमाणाणं** **47.णमो सिद्धायदणाणं**
48. णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

(शंभु छन्द)

जय-जय मुनिसुव्रत तीर्थंकर, हम नित्य तुम्हारे गुण गायें।
प्रभु पूजा में पुष्पांजलि हित, हम कमल पुष्प भी ले आये॥
जिन तीर्थों व चैत्यालय में, हैं नाथ ! तुम्हारी प्रतिमायें।
उनका आह्वान विधान करें, अपने सब संकट विनशायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(आँचली बद्ध चौपाई छंद)

निर्मल जल प्रभु चरण चढ़ाय, जन्म जरामृत रोग नशाय।
महानंद होय, जय जगबन्धु महानंद होय॥
जय-जय मुनिसुव्रत भगवान, कर दो हम सबका उत्थान।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस केशर चंदन कर्पूर, प्रभु पद में अर्पें भरपूर।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुवर्णी ले अक्षत पुंज, पूजें जिनवर के पद कुंज।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल मालती ले कचनार, अर्चें प्रभु पद जग सुखकार।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन शुद्ध बनाय, अर्चें प्रभु को क्षुधा नशाय।
महानंद होय, जय जगबन्धु महानंद होय॥
जय-जय मुनिसुव्रत भगवान, कर दो हम सबका उत्थान।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर मणि दीप सजाय, मोह-तिमिर हर भक्ति रचाय।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ दशांग सुगंधित धूप, पूजें निशदिन जिनपद भूप।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला आदि बहुत फल सार, अर्चे जिनपद मंगलकार।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्यों से अर्घ बनाय, पद अनर्घ हित जिनपद ध्याय।
महानंद होय, जय जगबन्धु, महानंद होय॥ जय-जय..॥ 9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ (अथ प्रत्येक अर्घ)

दोहा- मुनिसुव्रत जिनदेव का, करते भव्य विधान।
मंडल पर पुष्पांजलि, करें चन्देवा तान॥

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा- बाधा विघ्न विरोध संग, धीमे हो गर काम।
शीघ्र कार्य की सिद्धी हित, लो मुनिसुव्रत नाम॥

मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥1॥

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न विरोध विलंब आदि दोष निवारण समर्थाय शीघ्र कार्य सिद्धप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक शिक्षा में अगर, आते विघ्न अपार।
मुनिसुव्रत की अर्चना, हरती कष्ट हजार॥ मुनिसुव्रत..॥2॥

ॐ ह्रीं विद्या बुद्धि प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बार-बार पढ़कर अगर, रहे न कुछ भी याद।
मुनिसुव्रत का ध्यान कर, मिले ज्ञान का स्वाद॥ मुनिसुव्रत..॥3॥

ॐ ह्रीं स्मृति प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शिक्षा उच्च पद, पाना चाहो आप।
श्रद्धा से विधिवत करो, मुनिसुव्रत का जाप॥ मुनिसुव्रत..॥4॥

ॐ ह्रीं उच्चशिक्षा उच्चपद प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आई पी एस आदिक सभी, उच्च पदों का मान।
जिनभक्ति गुरु विनय से, मिलता सब सम्मान॥ मुनिसुव्रत..॥5॥

ॐ ह्रीं उच्च राजपद प्रदायकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोजगार ना हो अगर, नहीं चले व्यापार।
प्रभु के जाप विधान से, चले सफल व्यापार॥ मुनिसुव्रत..॥6॥

ॐ ह्रीं व्यापार वृद्धि उपद्रव रहिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातु के व्यापार सब, या जमीन निर्माण।
बिन माँगे जिन भक्ति से, सब में हो उत्थान॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥7॥

ॐ ह्रीं सर्व व्यापार सिद्धीकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च सफल व्यापार या, सफल बड़े उद्योग।
मुनिसुव्रत के हवन से, मिले सफल सब योग॥ मुनिसुव्रत..॥8॥

ॐ ह्रीं महाव्यापार सिद्धीकराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बार-बार घाटा लगे, कर्जा बढ़ता जाय।
मुनिसुव्रत का नाम व्रत, अंतराय विनशाय॥ मुनिसुव्रत..॥9॥

ॐ ह्रीं धनहानि सर्व कर्ज आदि दोष निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर से लेकर पैर तक, तन में हो बहु रोग।
औषधि प्रभु के नाम की, हरती सारे रोग॥ मुनिसुव्रत..॥10॥

ॐ ह्रीं आपाद शीर्ष[1] सर्वरोग निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिर के रोग अनेक विध, या हो पक्षाघात[2]।
मुनिसुव्रत आराधना, हरें कर्म की घात॥ मुनिसुव्रत..॥11॥

ॐ ह्रीं सिरशूल पक्षाघात आदि सर्वरोग निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्तचाप बढ़ने लगे, या फिर घटता जाय।
नाम महौषधि आपकी, सबको लय में लाय॥ मुनिसुव्रत..॥12॥

ॐ ह्रीं रक्तचाप आदि सर्व रोग विनाशन समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सिर मस्तिष्क, 2. लकवा।

मधुमेह के रोग से, तन नित गलता जाय।
नाम मंत्र के जाप से, देह व्याधि मिट जाय॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥13॥

ॐ ह्रीं मधुमेह आदि सर्वरोग विनाशन समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैंसर किडनी हृदय के, प्राणान्तक बहु रोग।
मुनिसुव्रत की अर्चना, जीते मृत्यु योग॥ मुनिसुव्रत..॥14॥

ॐ ह्रीं कैंसर किडनी हृदयादि प्राणांतक रोग विनाशन समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध ज्वर के जोर से, थर-थर काँपे देह।
हे जिन ! तेरे भक्त की, बने निरोगी देह॥ मुनिसुव्रत..॥15॥

ॐ ह्रीं सर्व ज्वरादि रोग निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाहन दुर्घटना घटे या, पैरों में चोट।
मुनिसुव्रत के ध्यान से, मिटे कर्म की खोट॥ मुनिसुव्रत..॥16॥

ॐ ह्रीं आकस्मिक दुर्घटना आदि सर्वरोग पीड़ा निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन कारण शत्रु बढ़े, बढ़े अकारण वैर।
श्री विधान जिनदेव का, हरे जगत का वैर॥ मुनिसुव्रत..॥17॥

ॐ ह्रीं बंधुत्वोपद्रव जिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झगड़े कोर्ट विवाद से, बचना चाहो भव्य।
पाप छोड़ प्रभु को भजो, पूजा कर लो भव्य॥ मुनिसुव्रत..॥18॥

ॐ ह्रीं राजभय कानूनी वाद-विवाद आदि सर्वदोष निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरते या चोटे लगें, या हड्डी हो भंग।
इन सब दुःख के नाश हित, प्रभु को भजो अभंग॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥19॥

ॐ ह्रीं अस्थि भंग आदि सर्व दुर्घटना निवारण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिषेण नृप ने किया, प्रभु का श्रेष्ठ विधान।
चक्री सुख पा श्रमण बन, पाया स्वर्ग प्रधान॥ मुनिसुव्रत..॥20॥

ॐ ह्रीं हरिषेण चक्री पूजिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लखन राम बलभद्र ने, कर मुनिसुव्रत ध्यान।
दुर्जय रावण जीतकर, पायी विजय महान॥ मुनिसुव्रत..॥21॥

ॐ ह्रीं रामलक्ष्मण पूजिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता ने ध्याया तुम्हें, बची सती की लाज।
अग्नि शीतल जल बनी, मिला स्वर्ग साम्राज्य॥ मुनिसुव्रत..॥22॥

ॐ ह्रीं सीता सती पूजिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यसन मुक्त जीवन बने, कर जिनवर गुणगान।
श्रावक व्रत उत्तम पले, होवे अन्त महान॥ मुनिसुव्रत..॥23॥

ॐ ह्रीं व्यसन मुक्त श्रावक सद्व्रत बुद्धिकरण प्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आप पर जो करे, पंचामृत अभिषेक।
उसका मेरु शिखर पर, आगे हो अभिषेक॥ मुनिसुव्रत..॥24॥

ॐ ह्रीं मेरु शिखरे स्नानयुक्तपदप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सर्वार्थ सिद्धी

मुनिसुव्रत की भक्ति से, बने भव्य निर्ग्रन्थ।
उत्तम संयम पालकर, करे कर्म का अन्त।।
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान।।25।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रंथ पद प्रदान समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तेरे साधक बने, जग प्रसिद्ध आचार्य।
गणधरादि पद प्राप्त कर, बने सिद्ध अनिवार्य।। मुनिसुव्रत..।।26।।

ॐ ह्रीं गणधरादि सूरिपद प्रदान समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारण भावना, भाते प्रभु के दास।
श्रेष्ठ समाधि साधते, कभी न होय उदास।। मुनिसुव्रत..।।27।।

ॐ ह्रीं षोडशकारण भावना साधनबलप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर पद श्रेष्ठ पा, वरें पंच कल्याण।
दिव्य देशना से करें, त्रिभुवन का कल्याण।। मुनिसुव्रत..।।28।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याण विभूतिप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! तुम्हारे ध्यान से, मन में हो आनंद।
कर्म कटे जिनभक्ति से, होता परमानंद।। मुनिसुव्रत..।।29।।

ॐ ह्रीं मनोनंदकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन अगोचर गुण अमल, गाकर वचनानंद।
जो पाये उसके कटे, सकल कर्म के फन्द।। मुनिसुव्रत..।।30।।

ॐ ह्रीं वचनानंदकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय कमल तुमको बिठा, होता कायानंद।
जीवन नित सुखमय बने, मिटे जगत का द्वन्द॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, कर लो श्रेष्ठ विधान।
सब संकट का नाश हो, निशदिन हो उत्थान॥31॥

ॐ ह्रीं कायानंदकरण समर्थाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु राजे जिन तीर्थ पर, अतिशय वहाँ अपार।
उन तीर्थों पर नित रहे, भक्तों की भरमार॥ मुनिसुव्रत..॥32॥

ॐ ह्रीं सर्व तीर्थ जिनालय विराजित अतिशयकारी श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

मुनिसुव्रत जिनवर का हम सब, श्रेष्ठ विधान रचायें।
बत्तीस कोठों का बहुवर्णी, मंडल श्रेष्ठ बनायें॥
लड्डू श्रीफल दीप पुष्प संग, आठों द्रव्य चढ़ायें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ्य चढ़ा हम, जिनगुण वैभव पायें॥

ॐ ह्रीं शनि आदि नवग्रह अरिष्ट निवारक, सर्व डाकिनी-शाकिनी, भूत-प्रेत, परकृत अनिष्ट मंत्र-यंत्र-तंत्र पीड़ा निवारक, धन-धान्य, पुत्र वंशवृद्धि कारक, ज्वरादि सर्व रोग निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **नीलमणिमय कुंभ से, करता हूँ त्रय धार।**
नील-कृष्ण बहु पुष्प की, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र - (1) ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः। (2) ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व सौख्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **मुनिसुव्रत तीर्थेश की, सुखदायी जयमाल।**
माला ले हम सब पढ़ें, पायें जिनगुण माल॥

(शंभु छंद)

जय-जय मुनिसुव्रत तीर्थंकर, हम उनकी जयमाला गायें।
जिनवर का महा विधान रचा, अपनी सब बाधा विनशायें॥
प्रभु ने भव-भव में श्रावक व्रत, व मुनि का व्रत अपनाया था।
भव तीन पूर्व चंपापुर का, प्रभुवर ने शासन पाया था॥1॥

हरिवर्मा राजा बन उनने, जिनवर का नित अभिषेक किया।
मंदिर मूर्ति निर्माण किये, मुनियों को नित आहार दिया॥
कई गुरुकुल व औषध शाला, भोजन शालायें बनवाईं।
हर तरह प्रजा की उन्नति हित, कई नियम नीतियाँ बनवाईं॥2॥

इक दिन मुनिनाथ अनंतवीर्य, चंपापुर नगरी में आये।
उनके दर्शन करने राजा, परिवार प्रजा के संग जाये॥
वो भव्यात्मा गुरु वाणी सुन, तत्क्षण मुनिव्रत को अपनाये।
वे द्वादशांग का अध्ययन कर, चारित्र विशुद्धि को पायें॥3॥

श्री सोलह दिव्य भावना भा, तीर्थंकर प्रकृति को बाँधें।
फिर अंत समय को निकट जान, वे श्रेष्ठ समाधि आराधें॥
फिर प्राणतेन्द्र बनकर प्रभु ने, स्वर्गों में पुण्य कमाया था।
अब मगध देश में राजगृही, उसका पुण्योदय आया था॥4॥

हरिवंश शिरोमणि सुमित्र नृप, सोमा रानी का भाग्य जगा।
उनके उर में जिनवर आये, सब जीवों का मिथ्यात्व भगा॥
श्रावण वदि द्वितीया श्रवण ऋक्ष, प्रभु गर्भागम से धन्य हुए।
वैशाख कृष्ण दशमी मंगल, तप जन्म तिथि बन धन्य हुए॥5॥

वैशाख कृष्ण नवमी के दिन, जिनवर को केवलज्ञान हुआ।
फाल्गुन कृष्णा बारस के दिन, फिर उनका मोक्ष प्रयाण हुआ॥

हे नाथ ! तुम्हें जो ध्याता है, वो शनिग्रह रिष्ट मिटाता है।
तव नाम जाप और पूजन से, सब दुःख संकट टल जाता है॥6॥

जो तव मूर्ति निर्माण करें, तू उसका नित उत्थान करे।
जो मन्दिर बनवाये तेरा, वो निश्चय मुक्ति प्रयाण करे॥
जो मंगल द्रव्य चढ़ाता है, वो नित नव मंगल पाता है॥
जो प्रातिहार्य अर्पण करता, वो धन सुख संपत् पाता है॥7॥

जो विधिवत हवन विधान करे, प्रभु तू उसका कल्याण करे।
जो नित चालीसा जाप करे, तू उनके सारे पाप हरे॥
हम सदा तुम्हारा ध्यान करे, औ तव चारित्र पुराण पढ़े।
'गुप्तिनंदी' प्रभु गुण गाकर, शिवपुर पथ पर अविराम बढ़े॥8॥

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न, बाधा, रोग, संकट, पीड़ा, उपद्रव निवारक, वाहनादि सर्व दुर्घटना, अपमृत्यु निवारक, सर्वविद्या सिद्धीप्रदायक, सर्वधन-धान्य, ऐश्वर्य, आरोग्य आयु वृद्धिकारक अतिशयकारी श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

जय-जय मुनिसुव्रत प्रभो, हम नित्य ध्यायें आपको।
त्रय रत्न पा हम आप सम, जीते सभी दुःख ताप को॥
संसार सागर पार कर, सम्पूर्ण कर्मों को नशें।
त्रय 'गुप्ति' मुनिव्रत साधकर, लोकाग्र में शाश्वत बसें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

(अडिल्ल छंद)

इच्छा पूरक आदीश्वर की वंदना।
धर्मतीर्थ नायक शांति जिन ! वंदना॥
चिंतामणि पारस बाबा की वंदना।
शासन नायक वीर प्रभु की वंदना॥1॥

चौबीसों जिनवर को नित वन्दन करूँ।
पाँचों परमेष्ठी को शत वन्दन करूँ॥
चौदह सौ बावन गणधर को नित नमूँ।
जिनवाणी माता को मैं नित-नित नमूँ॥2॥

अन्तर्मन में मुनिसुव्रत का नाम धर।
परम्पराचार्यों को पुनः प्रणाम कर॥
परदादा[1] व दादा[2] गुरु को नित नमन।
दीक्षा[3]-शिक्षा[4] दाता गुरु को नित नमन॥3॥

द्वय गुरुओं की कृपा बड़ी मन भावनी।
गुरु कृपा से कई विधान रचना बनी॥
मुनि दीक्षा के सत्ताइसवे वर्ष में
मुनिसुव्रत विधान रचा अति हर्ष है॥4॥

पंचम युग में शनि के रिष्ट विशेष हैं।
उनके हर्त्ता मुनिसुव्रत तीर्थेश हैं॥
मुनिसुव्रत जिनवर का श्रेष्ठ विधान है।
तीन[5] दिनों में रचा प्रभु के ध्यान से॥5॥

---

1. आचार्य श्री आदिसागरजी, 2. आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी, 3. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी, 4. वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी, 5. दिनांक 29 मई से 31 मई 2017

जिन तीर्थों में मुनिसुव्रत भगवान हो।
जिन मंदिर गृह चैत्यालय अभिराम हो॥
सभी जगह यह सुन्दर श्रेष्ठ विधान हो॥
इसके आराधक सबका उत्थान हो॥6॥

दोहा– जब तक रवि–शशि लोक में, तब तक रहे विधान।
गुप्तिनंदी की भूल को, शोध पढ़े विद्वान॥

मुनिसुव्रत भगवान की आरती नं. 1

(तर्ज : चंदा तू लारे.....)

भक्ति से थाली लेकर, घृत के शुभ दीप सजाकर।
हम सब उतारे तेरी आरती,
रे बाबा झुक झुक उतारे तेरी आरती॥

सुमित्र नृपजी के लाड़ले, और सोमा जननी जाये–2
राजगृही में जन्म हुआ था, सब जग में सुख छाये–2
सोमा माता के नन्दन, मुनिसुव्रत जगवंदन॥ मन से...

रिश्ते–नाते छोड़े जिनवर, जग से मन घबराया–2
राग द्वेष सब छोड़ दिया और, आतम ध्यान लगाया–2
जिनवर तुम केवलज्ञानी, तीर्थंकर आतम ध्यानी॥ मन से...

सीता सती का कष्ट मिटाया, राम को पार लगाया–2
मानी दम्भी तार दिये सब, मुक्ति पथ बतलाया–2
'गुप्ति' हो तुम सम ज्ञानी, बने शुद्धातम ध्यानी॥ मन से...

***

आरती नं. 2

रचनाकार : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

(तर्ज : माईन-माईन....)

तीर्थंकर मुनिसुव्रत जिन की, आरती हम सब गायें।
जगदुःखहर्त्ता, सबसुखकर्त्ता, जिनवर को हम ध्यायें।। बोलो मुनिसुव्रत की जय....

राजगृही में जन्मे स्वामी, सोमा सुत मनहारे।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, मुनि बन सबको तारे।।
गिरी सम्मेद शिखर से भगवन-2, मोक्ष महल को पायें।
जगदुःखहर्त्ता..... बोलो मुनिसुव्रत.....।।1।।

जिन भक्तों ने मुनिसुव्रत को, अपने हृदय बसाया।
प्रभुवर ने भी उन भक्तों का, बेड़ा पार लगाया।।
हम भी भक्त तुम्हारे भगवन-2, द्वार तिहारे आये।
जगदुःखहर्त्ता..... बोलो मुनिसुव्रत.....।।2।।

मुनिसुव्रत के जिनमंदिर में, जगमग ज्योति जलती।
शनिग्रह आदि की बाधायें, इस विधान से टलती।।
दीप जलाकर मंत्र जपें हम-2, फेरी नित्य लगायें।
जगदुःखहर्त्ता..... बोलो मुनिसुव्रत.....।।3।।

झाँझर ढ़पली ढोल बाँसुरी, ताल मृदंग बजायें।
गरबा घूमर नृत्य रचाकर, अतिशय पुण्य कमायें।।
तेरे चरणों में हम आये-2, कीर्त्तन पाठ रचायें।
जगदुःखहर्त्ता..... बोलो मुनिसुव्रत.....।।4।।

मुनिसुव्रत भगवन के तीरथ, सारे अतिशय वाले।
प्रभु चरणों की भक्ति करने, आते भक्त निराले।।
त्रय गुप्ति से तुम सम बनने-2, 'आस्था' शीश झुकाये।
जगदुःखहर्त्ता..... बोलो मुनिसुव्रत.....।।5।।

***